पेसा कानून के तहत गाँव विकास नियोजन

विलेज प्रोफाइल

पारडा चोबीसा

गाँव - पारडा चोबीसा

पंचायत - ओडवाडिया

तहसील - दोवड़ा, जिला - डूंगरपुर, राजस्थान

पीस

गाँव का इतिहास

गाँव के बुजुर्गो के अनुसार पारडा चौबीसा गाँव अग्रेंजो के शासन काल से भी पूर्व बसाया गया था । यहाँ के गाँववासियों के अनुसार गाँव में एक चौबीसा ठाकुर रहते थे गाँव पर उन्ही का शासन था इसलिए गाँव का नाम पारडा चौबीसा पड़ा है। गाँव में कालिका माता का मंदिर है और धूणी माता का मंदिर है। होली के त्यौहार पर सभी लोग मिल कर ढोलक लेकर नाचते है। झुमर खेलते है यह त्यौहार पांच दिन तक मनाया जाता है। रात्रि में होलिका दहन का दहन समय अनुसार करते है। इस प्रकार यह पर्व मनाया जाता है।

पारडा चौबीसा गाँव का परिचय

ओडवाडिया पंचायत में चार गाँव है - ओडवाडिया, पारडा चोबीसा, गरडा, भागलसलावट । पारडा चौबीसा गाँव ओडवाडिया ग्राम पंचायत का एक राजस्व गाँव है, जो जिला मुख्यालय डूंगरपुर से 24 किलोमीटर दूर बसा हुआ है। पारडा चौबीसा गाँव के सबसे नजदीकी गाँव रतनावाड़ा, पालबस्सी, कराता, गरडा, ओडवाडिया, भागलसलावट, बैरनिया है ।

पारडा चौबीसा गाँव में शिलालेख 20/02/2018 को हुआ और गाँव सभा का गठन उसी दिन कर दिया गया । पारडा चौबीसा में 180 घर है जिनकी आबादी लगभग 1000 है । पारडा चौबीसा आदिवासी बाहुल्य गाँव है यहाँ सबसे ज्यादा एस. टी. की परमार, अहारी और कटारा उपजाति और एस.सी. जाति के यादव समाज के लोग रहते है । गाँव में सरकार और वागड़ मजदूर किसान संगठन की ओर से पेसा कानून और उसकी शक्तियों की जानकारी के लिए अभियान चलाये जाते है और सरकारी कार्यकर्ता भी नियुक्त किये गये है जिन्हें पेसा-प्रेरक कहा जाता है । हर माह एक निश्चित तारीख को शिलालेख वाले स्थान पर गाँव सभा की बैठक की जाती है ।

गाँव की पूरी जमीन 155.2 हेक्ट. है जिसमें कृषि योग्य जमीन, बेनामी जमीन और चरागाह की जमीन है। गाँव में जंगल और पहाड़ नहीं है । थोड़े बहुत छोटी पहाड़िया है जिन पर लोगो ने अपने घर बना रखे है और पास में खेती करते है ।

यातायात और आवागमन

गाँव में जाने के लिए डूंगरपुर बस स्टैंड के बाहर से प्राइवेट बस और जीप मिल जाती है । गाँव में 3 पक्की सड़क है, एक पक्की सड़क उत्तर में गरडा गाँव से निकल कर दक्षिण में घटाऊ गाँव में जाती है । दूसरी पक्की छोटी सड़क घटाऊ से घाटा वस्सी जाती है और एक छोटी पक्की सड़क गाँव के फले में जाती है । पारडा चौबीसा में 2 सी.सी. सड़के है और 3 कच्ची सड़के है । दोनों छोटी पक्की सड़के तेज बारिश और देखरेख के अभाव में टूट गयी है और खड्डे पड़ गये है । जिस कारण वाहन भी जल्दी ख़राब हो जाते है । गाँव के भीतर फलों में जाने के लिए सी.सी. सड़क और कच्ची सड़क है। गाँव के मुख्य सड़क से प्राइवेट बस, ऑटो, जीप तथा निजी वाहन दूसरे गाँव में जाने के लिए मिल जाते है । गाँव के

फलों में ग्रामीण अपने नीजी वाहन जैसे मोटर साइकिल का उपयाग करते है या फिर पैदल जाया जाता है।

शिक्षा व स्वास्थय

गाँव में एक प्राथमिक विद्यालय और एक उच्च प्राथमिक विद्यालय है प्राथमिक विद्यालय में 35 बच्चे है और शिक्षक मात्र 1 है । उच्च प्राथमिक विद्यालय में अभी वर्तमान में 135 बच्चे पढ़ रहे है और 4 अध्यापक नियुक्त किये गये है । गाँव में 1 आंगनवाड़ी है लेकिन इसका भवन बिल्कुल जर्जर और गिरने की स्थिति में है ।

गाँव में सामान्य बिमारियों के ईलाज के लिए भी कोई उपस्वास्थ्य केन्द्र नही है और यह पंचायत के मुख्य गाँव ओडवाडिया में है जो गाँव से 3 किमी दूर है वहाँ दवाइयाँ भी मिल जाती है । सरकारी हॉस्पीटल गाँव से 7 किमी दूर फलोज में है। जिसके लिये टेम्पो या 108 की सुविधा है। बडा हॉस्पीटल 24 किमी दूर डूंगरपुर में है। पालतू जानवरों के इलाज के लिए पशु अस्पताल भी ओडवाडिया में 3 किमी दूर है ।

कृषि और रोजगार की स्थिति

गाँव के कुल जमीन के रकबे में से जो कृषि योग्य जमीन का हिस्सा है उसका अधिकतम हिस्सा छोटी पहाड़ियों का है । गाँव में समतल जमीन भी है जो लोगो ने ट्रेक्टर और मनरेगा में समतल करवाई है । खेती की मुख्य फसल - मक्का, उडद, मूंग, चना, सोयाबीन, चावल और सरसों है और जिन किसानो के पास समतल जमीन और सिंचाई की सुविधा उपलब्ध है वे गेहूँ, धान और गन्ना भी उगाते है । लेकिन पांच या छह माह खाने भर का अनाज ही हो पाता है उसके बाद सरकारी राशन की दुकान या बनिये से खरीदना पड़ता है। सरकारी राशन की दुकान ओडवाडिया गाँव में है ।

रोजगार के नाम पर गाँव में मनरेगा में छोटे बड़े काम होते रहते है और बाकी दिनों में कड़िया मजदूरी करते है या डूंगरपुर शहर में आते है और कुछ पढ़े लिखे लोग उदयपुर की मंडी या गुजरात में अहमदाबाद, मोडासा, हिम्मतनगर जाते है, जहां वे खेतों में तथा फेक्ट्री में काम करते है।

सिंचाई की व्यवस्था एवं स्थिति

सिंचाई के लिए गाँव में 1 नदी, 2 नाले, 1 तालाब, 2 एनिकट और 12 कुआँ है । गिने चुने लोगो के पास बोरवेल की सुविधा भी है । नदी में साल भर पानी रहता है और तालाब के पानी से सिंचाई के लिए पानी लिया जाता है । नालों पर 2 एनिकट बने है लेकिन वे जर्जर अवस्था में है इस कारण उनके बांध की दिवार में दरारों से पानी रिस कर खत्म हो जाता है । गाँव का भू-जल स्तर 200 फीट है । बारिश में सबसे ज्यादा पानी मिल जाता है और तेज ढलान ना होने के कारण पानी एक जगह तालाब में रुक जाता है । लेकिन मध्य ग्रीष्म ऋतु में पानी का जल स्तर नीचे चला जाता है और इनमे पानी की कमी

हो जाती है । तालाब के आसपास काफी कटीली झाड़ियाँ है । तालाब के पानी से ही पशुओ के पीने के पानी की व्यवस्था भी हो जाती है ।

बाज़ार

खरीदारी के लिए बड़ा बाजार फलोज 7 किमी दूर है और मुख्य बाजार डूंगरपुर 24 किमी दूर आना पड़ता है, डूंगरपुर बाजार में सभी प्रकार की घरेलू खरीदारी के अलावा शादी-ब्याह और त्यौहारों के लिए जेवर-आभूषन की खरीदारी की जाती है। डूंगरपुर आने के के लिए मुख्य सड़क से बस या जीप मिल जाती है।

गाँव की चिन्हित समस्याओं का विवरण निम्न् प्रकार है-

प्राकृतिक एवं मानवीय संसाधन

गाँव में जंगल नहीं है, आज से 40 साल पहले छोटी छोटी डूंगरीयों और घाटियों में सागवान और महुआ के पेड़ होते थे लेकिन अब ज्यादातर जमीन पर लोगो ने कब्ज़ा कर लिए है और जंगल बिल्कुल खत्म हो गया है । गाँव की बिलानाम जमीन पर गाँव का कब्ज़ा है । इस पर अभी सामूहिक दावा प्रस्तुत नहीं किया गया है । गाँव में आंगनवाड़ी और सामुदायिक भवन, एनिकट, श्मशान घाट जैसे मानवीय संसाधन खस्ता हाल और बेकार हो चुके है ।

आवागमन की समस्या

गाँव में 3 पक्की सड़क है लेकिन 2 छोटी पक्की सड़के तेज बारिश से कट गयी है उनमे खड्डे बड़े होते जा रहे है । गाँव के भीतर फलों में जाने के लिए 2 सी.सी. सड़क और 3 कच्ची सड़क है। गाँव में 1 सी.सी. नयी है लेकिन दूसरी टूट गयी है, उसके किनारों की नालियाँ कीचड़ से पट गयी है और गन्दा पानी सड़क पर आ रहा है । खड्डों की वजह से अक्सर दुर्घटना की आशंका रहती है। कच्ची सडको पर भी गर्मी में धूल उड़ती है और बारिश में इतनी ख़राब हो जाती है कि पैदल भी नहीं चला जा सकता है । गाँव के फलों में केवल नीजी वाहन जैसे मोटर साइकिल या पैदल जाया जाता है।

भूमि व जल प्रबंधन की कमी

गाँव के लोग कई पीढियों से यहाँ रह कर खेती और पशुपालन करते आ रहे है लेकिन ज्यादातर लोगों के पास अपनी कब्जे की जमीन के पट्टे नहीं है, और जिनके पास है वो भी न्यूनतम दो बीघा से अधिक नहीं है । ज्यादातर खेत छोटी डूंगरीयों पर होने के कारण उबड़-खाबड़ है जिन्हें समतलीकरण की आवश्यकता है और असिंचित खेतों में नहरों की कोई व्यवस्था नहीं होने के कारण उनमें केवल बारिश के पानी से ही फसल की पैदावार हो पाती है । जो खेत तालाब और नदी के किनारे पर है उन्हें सिंचाई के लिए पूरे साल पानी मिल जाता है और कुछ लोगो ने बोरवेल भी खुदवा रखे है । गाँव में 1 नदी और 2 नाले है जिस पर 2 एनिकट बने है लेकिन जर्जर और बांध में दरारे हो जाने से पानी कों रोक पाने में बेकार साबित हो रहे है । बारिश के पानी को रोकने के लिये बने एनीकट गर्मियों के मौसम से पहले सूख

जाते है । गाँव में पानी का स्तर 200 फुट से नीचे है। गाँव में 12 कुएं है, जिनमें 9 कुओं में साल भर पानी रहता है। गाँव में 13 हैण्डपम्प है । सभी हैण्डपम्प और बोरवेल का पानी फ्लोराइड से दूषित है। वर्षा के जल को संरक्षित करने के लिए नये एनिकट-चेकडैम निर्माण और पुराने एनिकट की मरम्मत के विषय की ओर हाल फिलहाल गाँव के लोगों ने कोई ध्यान नहीं दिया है । यदि गाँव के लोग सहमत होकर बोरवेल का उपयोग कम या बंद कर दे तो पानी सभी को प्रर्याप्त मिल पायेगा ।

पशुपालन संबंधित समस्या

गाँव में गाय, बैल, भैंस व बकरी पाली जाती है। गाँव में चरागाह की जमीन नाममात्र की है । खेती में सिंचाई के पानी की कमी के कारण खेतों में पशुओं के प्र्याप्त मात्रा में चारा भी नहीं उगाया जा सकता है। जो भी चारा बारिश के माह में होता है वह केवल चार या पांच माह ही चल पाता है उसके पश्चात खरीद कर लाना पडता है। चारे की एक पुली या गटठर सात रूपये में खरिदते है या फिर 4-5 परिवार वाले मिल कर 15000 से 18000 रूपये में भूसे का ट्रक खरीदते है।

गाँव में अधिक दूध उत्पादन और कृषि के उपयोग में लेने के लिए उन्नत किस्म के पशु नहीं है । चारे के अभाव में दुधारू पशु भी ज्यादा दूध नहीं देते है केवल घर भर का काम निकल जाता है ।

शिक्षा एवं स्वास्थ्य का निम्न स्तर

गाँव में 180 घर है, पढने वाले बच्चों के लिए गाँव में एक प्राथमिक विद्यालय और एक उच्च प्राथमिक विद्यालय है । प्राथमिक विद्यालय में 35 बच्चे है और शिक्षक मात्र 1 है । उच्च प्राथमिक विद्यालय में अभी वर्तमान में 135 बच्चे पढ़ रहे है और 4 अध्यापक नियुक्त किये गये है । गाँव में शिक्षा के निम्न स्तर और निम्न गुणवत्ता के लिए पूर्णतया जिले का शिक्षा विभाग जिम्मेदार है क्योंकि यदि प्रर्याप्त अध्यापक ही नहीं होंगे तो स्कूल में बच्चे कैसे पढने आयेंगे । इसके दूसरी ओर गाँव के लोगों ने भी इस समस्या से मुह मोड़ रखा है । दोनों ही स्कूलों में छात्रों की तुलना में अध्यापक कम है । विद्यालयों में कक्षा-कक्ष भी कम है दो कक्षाओ को एक साथ बैठा कर पढ़ाया जाता है । प्राथमिक स्कूलों में छत की मरम्मत की आवश्यकता है क्योंकि बारिश में पानी टपकता है और शौचालय की हालत जर्जर है, जिस कारण न तो बच्चे ढंग से पढाई कर पाते है न ही कक्ष में बैठ पाते है । उच्च शिक्षा के लिये डूंगरपुर शहर में आना पड़ता है, अधिकतर बच्चे यही पर किराये का कमरा लेकर रहते है । गाँव में 1 आंगनवाड़ी है लेकिन इसका भवन बिल्कुल जर्जर और गिरने की स्थिति में है, इसलिए उसमें लोग अपने बच्चों को कम भेजते है । गाँव में कोई सरकारी दवाखाना या स्वास्थ्य केंद्र नहीं है बुखार, जुकाम जैसी मौसमी बीमारी के लिए भी लोगो को 3 किमी दूर ओडवाडिया जाना पड़ता है ।

कृषि एवं खाद्यान्न की स्थिति

गाँव में अधिकतर किसान खाने के लिए अनाज बारिश के मौसम में उगा लेते है क्योंकि गर्मी के मौसम में पानी की कमी हो जाती है, जिससे सिंचाई के लिए पूरा पानी मिल नहीं पाता है । हालाँकि वहाँ पर 1

बड़ा तालाब है जिसमे पूरे वर्ष पानी रहता है, लेकिन इसके पानी से कुछ सिमित नजदीक के खेत ही सिंचित है । सिंचाई के लिए नहर व्यवस्था नहीं है । चूँकि गर्मी में जल स्तर नीचे चला जाता है और पानी की कमी हो जाती है इस कारण ग्रीष्म ऋतु में जिन खेतों में फसल उग रही है वे कुआं व बोरवेल के पानी से सिंचित है। गाँव में भू-जल स्तर 200 फुट नीचे चला गया है। खेती को जंगली जानवर जैसे जंगली सूअर, नीलगाय फसल नष्ट कर देते है । गाँव में गेहूँ, ग्वार, मक्का, उडद, तुहर, चने, चावल, सोयाबीन की खेती की जाती है, जो कि केवल 5 या 6 माह ही चल पाता है, खेती से होने वाला अनाज पर्याप्त नहीं होने के कारण खरीद कर लाना पड़ता है। जिसके लिये सरकारी उचित मूल्य की दुकान भी नहीं है यह पास के गाँव ओडवाडिया 3 किमी दूर है । राशन की दुकान पर गेहूं मिलता है, चीनी तथा केरोसीन त्यौहारों पर ही मिलता है। राशन दुकान पर पॉस मशीन की भी समस्या रहती है।

आजिविका एवं रोजगार के साधनों की कमी

गाँव में रोजगार का मुख्य साधन या तो खेती है अन्यथा मनरेगा मजदूरी एक मात्र आजीविका चलाने का साधन है । रोजगार की स्थिति भी काफी खराब है, गाँव के अधिकतर युवा गुजरात राज्य के अहमदाबाद, हिम्मतनगर, सूरत, मोडासा या महानगर बम्बई में मजदूरी करने के लिये जाते है। गाँव में नरेगा पर काम मिलता है। जिसमें गाँव की महिलायें जाती है तथा जो पुरुष यहां रह कर खेती करते है वे भी नरेगा में काम पर जाते है। वर्तमान में मनरेगा में जो मजदूरी दी जा रही है वह भी 100 रूपये तक ही दी जाती है। गाँव के लोग सुबह जल्दी शहरों में काम की तलाश में आ जाते है यहाँ उन्हें मंडी में काम मिल जाता है कई बार काम न मिलने पर खाली हाथ भी लौटना पड़ता है ।

गाँव में उपलब्ध संसाधन, उनकी हालत और संभावनाएं-

संसाधन	हालत	सम्भावना
जल नदी, नाला एनिकट तालाब कुआं हैण्डपम्प बोरवेल	गाँव में 1 नदी और 1 नाला है । नाले पर 2 एनिकट बने है । एनिकट पुराने और जर्जर हो गये है उनके बांध के दरारे पड़ गयी है । ये बारिश के मौसम बाद महीने भर में ही सूख जाते है । गाँव में चेकडैम नहीं बने है । गाँव में 12 कुएं और 13 हैंडपंप है सभी में पूरे साल पानी रहता है लेकिन उनका पानी आयरन और फ्लोराइड युक्त है, जिससे गाँव के लोगो को बीमारियाँ हो रही है । गाँव में 1 बड़ा तालाब है जिसका पानी पशुओ के काम आता है । इसके पानी से सिंचाई भी की	गाँववासियों के अनुसार तालाब के आसपास की कटीली झाडियों की सफाई की जाये, गहराई बढ़ायी जाये तो ज्यादा समय तक पानी रह सकता है और सिचाई भी पूरी हो सकती है । नहर निकाली जाये तो सभी खेतों को सिंचाई का पानी मिल जायेगा । जर्जर एनिकट को अच्छा किया जाये ताकि पानी को रोका जा सके । नाले के रास्ते पर छोटे छोटे चेकडेम बनाये जाए तो गाँव में जमीनी पानी का तो जलस्तर ऊंचा होगा । फ्लोराइड मुक्त पानी के लिए आर.ओ.

	जाती है । असिंचित खेतों तक नहर सुविधा न होने से लोग बारिश के मौसम में ही फसल ले पाते है ।	प्लांट लगना चाहिए ।
जमीन कृषि भूमि बिला नाम भूमि चरागाह	गाँव की कृषि भूमि छोटी पहाडी, उबड़-खाबड़ जमीन है। गाँव में बिलानाम जमीन पर गाँव का कब्ज़ा है । गाँव में चारागाह न के बराबर है जिस पर केवल बरसात में होने वाली घास होती है जिसे चारे के रूप में लोग काट कर लाते हैं। समतल भूमि ही सिंचित है बाकी जमीनें असिंचित है। असिंचित भूमि पर बरसात में होने वाली फसल ही पैदा होती है।	गाँव की उबड़-खाबड़ जमीनों को अपना खेत अपना काम योजना के तहत समतलीकरण करके उसे उपजाऊ बनाया जा सकता है । गाँव की बेकार पड़ी जमीन को उन्नत कृषि तकनीकी के माध्यम से उपजाऊ बनाया जा सकता है । रासायनिक खादों और कीटनाशकों का कम उपयोग करना । मिटटी की जाँच करना और उसके अनुसार मिटटी का उपचार करके अनुकूल खेती करना ।
सड़क कच्ची सड़क सी.सी. सड़क पक्की सड़क	गाँव में 2 छोटी पक्की सड़क तेज बारिश में टूट गयी है । खड्डों से मिटटी और गिट्टी उड़कर राहगीरों कों चोट पहुचाती है । सी.सी. सड़क की नालिया कीचड़ से भर गयी है जिससे गंदा पानी सड़क पर बह रहा है । कच्ची सड़के भी बारिश में कीचड़ से लबालब हो जाती है । सड़क किनारे रहने वाले लोगों को समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है ।	गाँव की अधूरी सड़क को सही किया जाये । यदि गाँव के सभी कच्चे रास्ते सी.सी. सड़क में बदले जाये और सी.सी. सड़कों को चोड़ा करके पुनः बनाया जाये तो गाँव के भीतरी इलाके में आवागमन में सुविधा होगी। साथ ही पक्की सड़कों के किनारों पर रोड लाइट की व्यवस्था होनी चाहिए ।
स्कूल	गाँव में दो स्कूल है एक प्राथमिक स्कूल और एक उच्च प्राथमिक स्कूल है। दोनों स्कूलों की छत से बारिश में पानी टपकता है और फर्श भी टूट रही है। खेल का मैदान और शौचालय की स्थिति सही नहीं है । पीने के शुद्ध पानी की व्यवस्था नहीं है । छात्रों की तुलना में अध्यापक नियुक्ति बहुत कम है । दी जाने वाली शिक्षा की स्थिति काफी ख़राब दर्जे की है । कमरे पुराने और जर्जर हो गये है । उनका रंगरोगन उड़ गया है । कक्षा कक्ष भी कम है दो कक्षाये एक	स्कूल में छत के ऊपर चाइना मोजिक करवाकर और प्लास्टर करवा कर अच्छा बनाया जा सकता है। फर्श, शौचालय की भी मरम्मत करवाई जा सकती है। खेल के मैदान की बाउन्ड्री बना कर सुरक्षित किया जा सकता है । अध्यापक नियुक्ति के लिए शिक्षा अधिकारी को पत्र लिखना और दोनों अध्यापकों को समय अपर आने के लिए पाबंद करना यह कार्य गाँव सभा के माध्यम से करना है ।

	साथ बैठकर पढ़ती है ।	
सामुदायिक भवन और आंगनवाड़ी	सामुदायिक भवन और आँगनवाड़ी दोनों ही बहुत ज्यादा जर्जर और खंडहर हो गये है । लोग इन्हें बिल्कुल भी काम में नहीं लेते है ।	नये भवनों का निर्माण करवाना निगरानी समिति गठीत करना ।
शमशान घाट	1 श्मशान घाट है लेकिन टीन, छाया, पानी, रोड की व्यवस्था नहीं है न ही कोई बैठक व्यवस्था है ।	नए सिरे से निर्माण करवाना है और एक बैठक के लिए भवन बनवाना है ।

गाँव सभा द्वारा चिन्हित मुख्य समस्याएं, उनके कारण, प्रस्तावित समाधान एवं वरीयता

क्र. सं.	समस्याएं	सार्वजनिक/ व्यक्तिगत	कारण	समाधान	तात्कालिक/ दीर्घकालिक
1	**शिक्षा सम्बंधित समस्या**	**सार्वजनिक**	गाँव में प्राथमिक और उच्च प्राथमिक स्कूल है । दोनों स्कूलों में मिलाकर 5 अध्यापक नियुक्त है । वो अध्यापक भी समय पर नहीं आते है क्योंकि उन पर दूसरे कार्यो की जिम्मेदारी भी है । स्कूल की छत से बारिश में पानी टपकता है और छत से प्लास्टर भी गिर रहा है साथ ही फर्श भी टूट रही है । स्कूल का खेल मैदान और शौचालय की स्थिति सही नहीं है । कमरे कम है और ज्यादा कमरों की आवश्यकता है ।	गाँव में स्कूलों सभी व्यवस्थाये पूरी और अच्छी दी जाये । अध्यापकों की नियुक्ति हो और समय पर आने के लिए पाबंद किया जाना चाहिये । नये कमरे बनाये जाये । पीने के शुद्ध पानी की व्यवस्था हो ।	**तात्कालिक**
2	**पेयजल की समस्या**	**सार्वजनिक**	गाँव में 12 कुएं और 13 हैंडपंप है 4 कुओं कों छोड़ कर सभी में साल भर पानी रहता है । लेकिन पानी आयरन और	जो कुएं बंद हो गये है या जिनमे पानी कम आने लगा है उन्हें गहरा करवाना और गाँव में आर.ओ. प्लांट लगवाना	**दीर्घकालिक**

			फ्लोराइड युक्त है । गाँव का जलस्तर 200 फिट से नीचे चला गया है।	ताकि फ्लोराइड मुक्त पेयजल मिल पाए । घरो में पक्के टांके में बरसात के पानी को रोक कर पेयजल की पूर्ति की जा सकती है।	
3	**कृषि संबधी समस्या**	**व्यक्तिगत / सार्वजनिक**	गाँव की कृषि योग्य उपलब्ध भूमि उबड़ खाबड़ है। सिंचाई के लिये नहर की सुविधा नहीं है। सिंचाई के लिए 2 नाले हैं जिसका पानी गाँव में रोकने के लिए 2 जर्जर एनिकट है इनकी दरारों से पानी बह जाता है, गर्मी के मौसम में पानी जल्दी ख़त्म हो जाता है । अत्यधिक रासायनिक खाद प्रयोग, कीटनाशकों के उपयोग और पानी के खारेपन के कारण खेती में ऊपज ज्यादा नहीं हो पाती है ।	खेतों को गाँव सभा द्वारा प्रस्ताव लेकर अपना खेत-अपना काम योजना के अंतर्गत समतलीकरण करवाना । बारिश के पानी को रोकने के लिए खेतों की मेड़ बंदी तथा कच्चे चेक डैम का निर्माण करना । घर और खेतों में पानी को रोकने के लिए टाके (पक्के खड्डे) बनवाना । मिटटी की जाँच करवाना और मिटटी का उपचार करवाकर उसके अनुरूप फसल लेना ।	**तात्कालिक**
4	**रास्ते की समस्या**	**सार्वजनिक**	गाँव में पक्की सड़कों और सी.सी. सड़के तेज बारिश होने के कारण काफी ख़राब हो गयी है जिसके कारण हादसों की संभावना बनी रहती है । अंदरूनी रास्ते भी कच्चे है । धुल मिटटी और पत्थरों के लगने की समस्या से लोग बहुत परेशान है । नालिया	गाँवसभा कमेटियों के गठन के बाद जहां जहां रास्ते नहीं है वहां के प्रस्ताव लिए गए हैं और टूटे हुए रास्तों को फिर से ठीक करना और कच्ची सड़क को सी.सी. सड़क में बदलना ।	**तात्कालिक**

			भी कीचड़ से भर गयी है ।		
5	**सरकारी योजनाओं की सहीं क्रियान्विति ना होना - आवास निर्माण, पेंशन और उसके भुगतान संबधी समस्या और शौचालय का न बनाना ।**	**व्यक्तिगत**	गाँव में अभी भी कुछ परिवार वालों को आवास योजना का लाभ नहीं मिला है । इसमें सबसे बड़ी समस्या यह है कि जिन लोगों के आवास बन भी गए हैं उनमें से ज्यादातर लोगों का पूरा भुगतान नहीं हुआ है। गाँव में जिन लोगों को आवास की बेहद जरूरत है उनके आवास गरीबी के कारण नहीं बने हैं पेंशन में समस्या यह है कि गाँव में सरकारी कागजातों में उम्र अलग-अलग होने से भी लोगों की पेंशन भी बंद है। और समय पर जीवित प्रमाणपत्र ना प्रस्तुत करना भी एक कारण है ।	गाँव के सबसे जरूरतमंद लोगों को आवास निर्माण हेतु आवेदन कराना और उसके लिए प्रयास करना। बकाया राशि का भुगतान तुरंत करना। जिन लोगों को पेंशन नहीं मिल रही है उनको पेंशन योजना से जोड़ना। बंद पेंशन का भुगतान तुरंत शुरू करवाना।	**तात्कालिक**
6	**काबिज भूमि और बिलानाम जमीन पर खातेदारी का हक नहीं मिलना**	**सार्वजनिक**	लोग कई पीढ़ियों से गाँव में बसे हैं लेकिन जितनी भूमि पर वह काबिज है उसकी खातेरदारी का हक उनको नहीं मिला है। पिछले कुछ सालो से इसे सरकार के द्वारा बंद कर दिया गया है । जिसके कारण भविष्य में उनकी जमीन आसानी से छीन जाने का संकट खड़ा हो गया है।	काबिज भूमि पर सामूहिक दावा करना। पट्टे की जमीन जिसकी पैनल्टी राजस्व विभाग ने लेना बंद कर दिया है उसे कोर्ट में जमा करना क्योंकि पेनल्टी नहीं देने से पट्टा खारिज हो जाएगा और धारा 91 के अनुसार काबीज जमीन का नियमन कराना। गाँव सभा द्वारा सबकी फाइल तैयार करके एक	**दीर्घकालिक**

				साथ राजस्व विभाग में दावे का मुकदमा करना।	
7	**खाद्य सुरक्षा का पूरा लाभ नहीं मिलना**	**सार्वजनिक**	सरकारी राशन की दुकान दूसरे गाँव में है लेकिन वहां और भी दूसरे गाँव से लोग आते है और अक्सर पॉस मशीन में फिंगरप्रिंट न मिलना या इन्टरनेट से कनेक्ट न होने की समस्या आती रहती है । अनाज में केवल गेहूँ दिया जाता है, शक्कर और केरोसिन त्यौहार पर मिलता है ।	राशन डीलर को पाबंद कर समय पर दुकान खोलने और पूरा राशन दिलवान और जिन लोगों कों राशन नहीं मिल रहा है उनके नाम योजना में जुड़वाने के लिए गाँव सभा में प्रस्ताव लेना ।	**तात्कालिक**

संसाधन आंकलन व SWOT विश्लेषण

S- Strengths शक्तियां	W- Weakness कमजोरी	O- Opportunities अवसर	T- Threats चुनौतियां
आवागमन - कच्चे रास्ते, सी.सी. सड़क, पक्की सड़कें	टूटी हुई पक्की और सी.सी. सड़कों कों ठीक करने की मांग नहीं करना । कच्चे रास्ते को आर.सी.सी. नहीं करना। नालियों की मरम्मत और सफाई की मांग नहीं करना ।	रास्ते ठीक होने से गाँव में साधन आ जा सकते हैं लोगों को आने जाने में समय की बचत होगी। रोड लाइट लगने से दुर्घटनाओ की संभावना कम हो जायेगी और बीमारी की हालत में मरीज को जल्दी चिकित्सकिय सुविधा मिल सकती है । नालियाँ अच्छी होने से मच्छरों और अन्य बिमारियों से रोकथाम हो सकती है ।	इस समस्या को लेकर अधिक से अधिक लोगो का गाँव सभा में नहीं आना, साथ ही वे इसको पंचायत पर छोड़ रहे है ।
जल नदी, नाला	गाँव में 1 नदी और 1 नाला है जिसपर 2	कच्चे और पक्के चेकडेम निर्माण, पानी को रोकने	पंचायत द्वारा इस चुनौती से निपटने के

तालाब एनिकट कुआं बोरवेल हैंड पंप	एनिकट भी बने है लेकिन एनिकट जर्जर और कमजोर है । 1 बड़ा तालाब है । गर्मी में पानी सूख जाने से संकट हो जाता है । नाले और तालाब से नहर की सुविधा नहीं करना । जल संरक्षण के लिए गाँव के लोगों में जागरूकता की कमी। सरकारी योजना और मौसम पर अधिक निर्भर रहना ।	के लिए पक्की टंकी का निर्माण करवाना । बरसात के पानी को योजनाबद्ध तरीके से रोका जाए । जिससे सिचाई और अशुद्ध पीने के पानी के संकट को दूर किया जा सकता है और भू जल स्तर को भी ऊँचा किया जाता हैं। बोरवेल का उपयोग कम करके कुओ से पानी निकालना । ताकि जल स्तर एकदम से नीचे न जाये । नहर निकालने से सभी को सिंचाई का पानी मिल जायेगा । गाँव सभा में इसके लिए प्रस्ताव लेना ।	लिए कोई पहल नहीं करना और योजना होते हुए भी ना क्रियान्वित करना । गाँव के लोगों की उदासीनता।
आजीविका के साधन	गाँव में रोजगार के साधन का अभाव। कृषि भूमि और उत्पादन की कमी। अच्छी नस्ल के पशुओं का अभाव।	गाँव में खाली पड़ी जमीन और पहाड़ियों पर वृक्षारोपण, अच्छी नस्ल के पशुओं का सरकार के द्वारा उपलब्ध करवाना । लघु उद्योग, सब्जी की खेती से आय के स्रोत बढ़ाये जा सकते हैं।	गाँव के लोगों के पास पर्याप्त खेती की जमीन का अभाव। उन्नतशील बीज और बेहतर किस्म के पशुओ का अभाव । जमीन के बेहतर प्रबंधन की कमी।
भूमि	सभी लोगों के पास कब्जे की जमीन के पट्टे ना होना । खेती की पर्याप्त जमीन नहीं होना।	खेती की जमीन की उर्वरा शक्ति को बढ़ाना । गाँव की सार्वजनिक खाली पड़ी जमीन पर फलदार वृक्षारोपण करवाना।	सभी लोगों के पास पर्याप्त जमीन का अभाव। सिंचाई का अभाव खाली पड़ी जमीन के बेहतर उपयोग की योजना का अभाव।

- **गाँव सभा द्वारा तैयार गाँव का नजरिया नक्शा-**

- **गाँवसभा द्वारा तैयार गाँव विकास योजना में प्रस्तावित कार्यो का विवरण -**

प्रस्तावित कार्य	संख्या
कुरमेला तालाब गहरीकरण के सम्बन्ध में	1
सार्वजनिक कुआ खुदवाने के सम्बन्ध में	3
श्मशान घाट निर्माण के सम्बन्ध में	2
एनिकट निर्माण के सम्बन्ध में	2
पशु चिकित्सालय निर्माण के सम्बन्ध में	1
सब सेन्टर निर्माण के सम्बन्ध में	1
प्राथमिक विद्यालय नया भवन निर्माण के सम्बन्ध में	2

पक्की नहर निर्माण के सम्बन्ध में	5
नए कुएं और पुराने कुएं गहरीकरण के सम्बन्ध में	28
कच्चा रास्ता निर्माण के सम्बन्ध में सी.सी. सड़क निर्माण के सम्बन्ध में	11 3
खेत समतलीकरण के सम्बन्ध में	11
नए हैंडपंप लगाने के सम्बन्ध में	13
पी.एम. आवास के के सम्बन्ध में	77
सामुदायिक भवन निर्माण के संबंध में	1
पनघट (आर.ओ. प्लांट) लगाने के सम्बन्ध में	1
बस स्टैंड निर्माण के सम्बन्ध में	1
राशन दुकान निर्माण के सम्बन्ध में	
पेंशन के सम्बन्ध में (वृद्धापेंशन, विधवा पेंशन, विकलांग पेंशन, एकलनारी)	45
पशुवाडा निर्माण के सम्बन्ध में	116
चेकडैम निर्माण के सम्बन्ध में	32
खेत समतलीकरण के सम्बन्ध में	43
एनिकट निर्माण के सम्बन्ध में	1

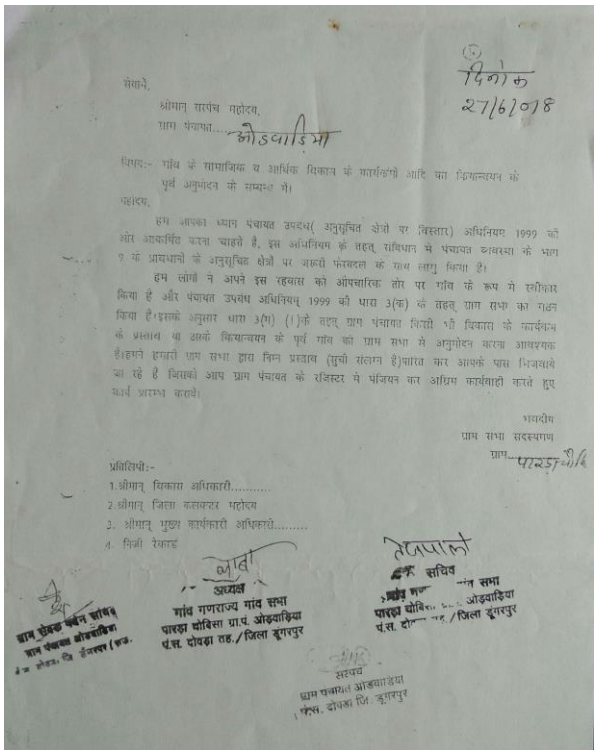

गाँव विकास नियोजन प्रक्रिया -

दिनांक 27/6/2018

सेवामें,

श्रीमान् सरपंच महोदय,

ग्राम पंचायत.....ओडवाडिया

विषयः- गांव के सामाजिक व आर्थिक विकास के कार्यक्रमों आदि का क्रियान्वयन के पूर्व अनुमोदन के सम्बन्ध में।

महोदय,

हम आपका ध्यान पंचायत उपबंध(अनुसूचित क्षेत्रों पर विस्तार) अधिनियम 1999 की ओर आकर्षित करना चाहते है, इस अधिनियम के तहत् संविधान मे पंचायत व्यवस्था के भाग 9 के प्रावधानों के अनुसूचित क्षेत्रों पर जरूरी फेरबदल के साथ लागु किया है।

हम लोगो ने अपने इस रहवास को औपचारिक तोर पर गांव के रूप मे स्वीकार किया है और पंचायत उपबंध अधिनियम् 1999 की धारा 3(क) के तहत् ग्राम सभा का गठन किया है।इसके अनुसार धारा 3(ग) (।)के तहत् ग्राम पंचायत किसी भी विकास के कार्यक्रम के प्रस्ताव या उसके क्रियान्वयन के पूर्व गांव की ग्राम सभा से अनुमोदन करना आवश्यक है।हमने हमारी ग्राम सभा द्वारा निम्न प्रस्ताव (सुची संलग्न है)पारित कर आपके पास भिजवाये जा रहे है जिसको आप ग्राम पंचायत के रजिस्टर मे पंजियन कर अग्रिम कार्यवाही करते हुए कार्य प्रारम्भ करावें।

भवदीय

ग्राम सभा सदस्यगण

ग्राम पारड़ा चौबिसा

प्रतिलिपीः-

1.श्रीमान् विकास अधिकारी..........

2.श्रीमान् जिला कलक्टर महोदय

3. श्रीमान् मुख्य कार्यकारी अधिकारी.........

4. निजी रेकार्ड

अध्यक्ष
गांव गणराज्य गांव सभा
पारड़ा चौबिसा ग्रा.पं. ओड़वाड़िया
पं.स. दोवड़ा तह./जिला डूंगरपुर

सचिव

सरपंच
ग्राम पंचायत ओडवाडिया
पं.स. दोवड़ा जि. डूंगरपुर

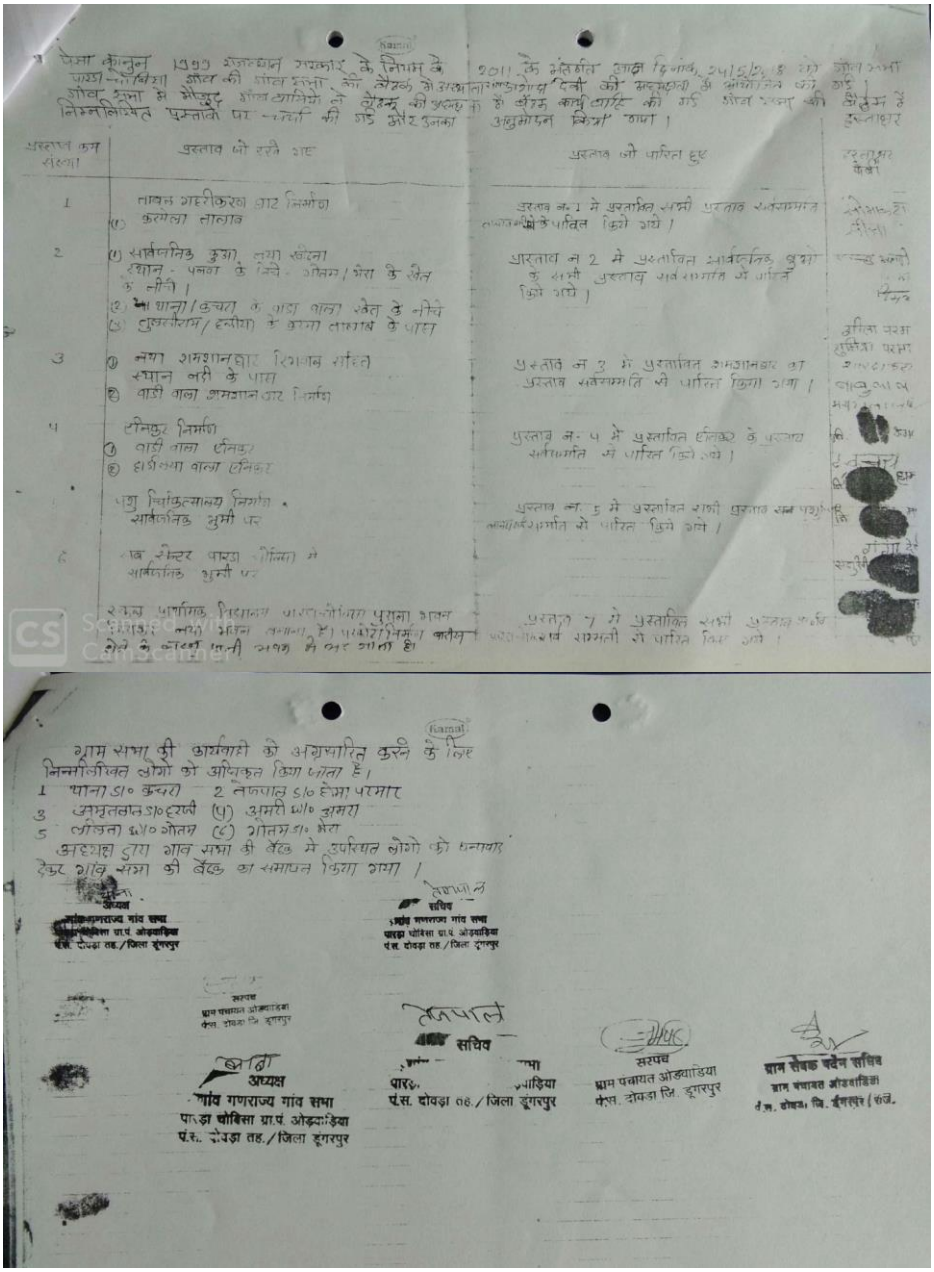

विलेज प्लानिंग फेसिलिटेटर टीम (वीपीएफटी)

1. थाना s/o कचरा जी परमार
2. तुलसी w/o जवाहरलाल
3. तेजपाल s/o होमाजी
4. अमृतलाल s/o हरजी परमार
5. अमरी बाई w/o अमृतलाल अहारी
6. नर्वदा w/o भगवान परमार
7. जीजा w/o लक्ष्मण कटारा